हे जगत जननी आपको लाखों सलाम...

जीवन के सफर की शुरुआत नारी से होती है और नारी पर ही अंत। हर कोई व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप से, विशेषतः यह महसूस कभी ना कभी तो करता ही है कि उसे यहाँ लाने से लेकर, उसकी जीवन संगिनी बन, साथ निभाने तक, और जब हाथ-पाँव काम ना करें, अन्तिम पड़ाव तक उसकी परछाई, उसका साया हमें कितना सुख देता रहा है! देता है। वह अन्त तक सहन करती, समाती व आपके ऊपर की आँच को अपने ऊपर लेने को आतुर रहती है। जब कोई भी आत्मा नारी बनती है तो शुरू से ही उसके अन्दर ये गुण जन्मजात आ जाते कि मुझे जीवन में नारीत्व को धारण करना है। ऐसी जीवनदायिनी शक्ति नारी को कोटि-कोटि प्रणाम।

कमलापति की कमला को बचाओ कलंक से...

बाबुल के आंगन में हँसती, खिलखिलाती, सबको अपनी ओर बरबस खींचती, वे नन्हें पांवों से अनाज के मोती रूपी दानों को बिखेरती, एक ऐसी आहट, जिसका स्पर्श भी स्वर्गिक सुख देता है। आज वह करूण क्रन्दन करते पांवों के कोई भी दीदार को राज़ी नहीं। कहाँ गई वो अस्मिता, खो गई वह पहचान, कोई भी उस अन्तरमन की आवाज़ को पहचाने भी तो कैसे? क्योंकि सभी रमे पड़े हैं उस देह की रक्षा में। उसे बचाने के लिए न जाने कितने उपाय करते, फिर भी उस अस्मिता, उस गरिमा की रक्षा नहीं हो पा रही है।

आज क्या है मानसिक स्थिति

आप सभी कल्पना करके देखें, कोई ऐसी स्थिति बने, आप बहुत अच्छी खुशहाल ज़िन्दगी जी रहे हैं तभी अचानक आप उन परिस्थितियों से घिर जाते हैं, जिसमें रक्षा तथा सुरक्षा, समाज तथा सामाजिक बन्धनों का डर, आपकी अपनी गरिमा जब संकट के घेरे में हो! आप उसे सबसे कहते फिरेंगे क्या? या आप हल्ला मचायेंगे कि आइए देखिए ये क्या हो गया! नहीं, आप उसे पर्दा करेंगे कि किसी को रत्ती भर आहट ना हो, आखिर यह हमारी इज़्ज़त है, आबरू है। इसे हमें बचाना है। वही है सबसे बड़ा आधार हमें समाज में ऊँचा सिर उठा कर जीने का। तो यह बात तो स्वयं सिद्ध हो रही है कि नारी की अस्मिता हमारे लिए क्या मायने रखती है।

जीवन का प्रारंभ है नारी

जीवन के सफर की शुरुआत नारी से होती है और नारी पर ही अंत। हर कोई व्यक्ति, व्यक्तिगत रूप से, विशेषतः यह महसूस कभी ना कभी तो करता ही है कि उसे यहाँ लाने से लेकर, उसकी जीवन संगिनी बन, साथ निभाने तक और जब हाथ-पाँव काम ना करें, अन्तिम पड़ाव तक उसकी परछाई, उसका साया हमें कितना सुख देता रहा है। देता है। वह अन्त तक सहन करती, समाती व आपके ऊपर की आँच को अपने ऊपर लेने को आतुर रहती है। जब कोई भी आत्मा नारी बनती है तो शुरु से ही उसके अन्दर ये गुण जन्मजात आ जाते हैं कि मुझे जीवन में नारीत्व को धारण करना है। ऐसा ही आप भी सोचते होंगे। लेकिन सच्चाई उसके विपरीत है, अनुवांशिक रूप से कोई भी अपने बारे में ऐसा नहीं सोच सकता।

क्या कर रहा है प्रभावित

लेकिन हमारे खुद के विचार उस पर प्रभाव ज़रूर डालते हैं कि इसे बचाना है, इस डर को मन पूरी तरह स्वीकार करता जाता। फिर एक भयावह रूप लेकर एक कथानक (रचना के आदि से अन्त का सामूहिक रूप) बन जाता है। फिर इन्हीं बातों को कथाकारों को कथा प्रसंग तथा कथांश में एक दृश्य अभिनित करने का जन्मजात अधिकार मिल जाता है। नारी ऐसी ही थी, इसे ऐसे ही रखना है।

अब तो जागो

आप ज़रा गौर कीजिए, जिन्हें हम कमलापति की कमला कहते, जो हमेशा कमलासन धारण कर कमलिनी पर विराजित होती है। आज हम उसे कमाई कमानी, कमअक्ल तथा एक करनी की भांति देखते हैं। नारी उस करतार की करामात है, जिससे इस सृष्टि को रचा गया। अगर वह एक करवट ले तो वह करामात कर सकती है। वह उस करुणानिधान के करीब रहने वाली कर्णेन्द्रिय व जो ज्ञान रूपी कर्णफूल धारण कर, निरन्तर कर्त्तव्य की ओर अग्रसर है। वो नदी की कल-कल के कलरव (मधुर ध्वनि) की भांति है व नारी जो कलत्र वन कलगी (टोपी) जैसी रक्षात्मक है, अगर वो हट गयी, तो कलई खुलते देर नहीं लगेगी।

हमें एक साथ, एक ऐसा संकल्प लेना होगा, उस कर को, उस कलई को जिसने आजन्म हमारे आँसू पोंछे, हमें कर्मठ बनाया, कुछ ऐसा करो, जो कल्प में करामात के रूप में जाना जाए रक्षा व अस्मिता के लिए, उसे कलंक रूपी कालिमा ना लगने दें।

कथा सरिता

सपने के सच होने की कहानी

एक बार की बात है। एक शहर में एक लड़का रहता था। स्कूल से आने के बाद वह अपने पिता के साथ काम पर जाया करता था। उसके पिता एक घोड़े के अस्तबल में काम करते थे। वो लड़का रोज़ देखता और सोचता था कि किस तरह उसके पिता इतनी मेहनत करते हैं, लेकिन फिर भी उन्हें वो मान-सम्मान नहीं मिलता है।

एक दिन उसके स्कूल में उसके शिक्षक ने सभी बच्चों को एक लेख लिखकर लाने के लिए कहा, उस लेख में सभी बच्चों को यह लिखकर लाना था कि वे बड़े होकर क्या बनना चाहते हैं और उनका क्या सपना है? अब इस लड़के ने रातभर जागकर एक बहुत ही बेहतरीन लेख लिखा, जिसमें उसने लिखा कि वह बड़े होकर एक अस्तबल का मालिक बनेगा। जहाँ बहुत सारे घोड़े प्रशिक्षण लेंगे और आगे अपने सपने को पूरे विस्तार से बताते हुए उसने 200 एकड़ के अपने सपनों वाले रेंच की फोटो भी बना दी। अगले दिन उसने पूरे मन से अपना लेख शिक्षक को दे दिया। शिक्षक ने सभी कॉपियां जांचने के बाद परिणाम सुनाया और उस लड़के के लेख के लिए कोई मार्क्स नहीं दिए और उसकी कॉपी में बड़े अक्षरों में फेल लिख दिया।

अब लड़का टीचर के पास गया और पूछा, आपने मुझे मार्क्स नहीं दिए और फेल क्यों कर दिया? टीचर ने कहा, अगर तुम भी बाकी बच्चों की तरह छोटा-मोटा लेख लिख लाते तो तुम पास हो जाते, लेकिन तुमने जो लिखा है वो पूरी तरह से असंभव है। तुम लोगों के पास कुछ नहीं है, इसलिए जो तुमने लिखा है ऐसा सम्भव ही नहीं हो सकता है। तुम चाहो तो मैं तुम्हें एक और मौका देता हूँ। तुम कल दूसरा लेख लिख कर लाना, जिसमें कोई वास्तविक लक्ष्य बना लेना। घर जाकर लड़के ने बहुत सोचा लेकिन उसे कुछ और बनने का विचार ही नहीं आ पाया। अगले दिन उसने टीचर के पास जाकर कहा, आपको जो भी मार्क्स देना हो आप दे दीजिए लेकिन मेरा तो यही सपना है और मुझे कुछ नहीं बनना है, मैं अपना सपना बदल नहीं सकता। आखिरकार कड़ी मेहनत और लगन से 20 साल बाद इस लड़के ने अपना सपना सच कर दिखाया।

इस कहानी से हमें यह समझ लेना चाहिए कि अगर हम कुछ करने की ठान लें और बिना विचलित हुए पूरे मन से उस लक्ष्य को पाने में अपना सारा ध्यान लगा दें तो हमें अपना सपना पूरा करने से कोई नहीं रोक सकता।

चिल्लाओ मत

एक हिन्दू सन्यासी अपने शिष्यों के साथ गंगा नदी के तट पर नहाने पहुंचा। वहां एक ही परिवार के कुछ लोग अचानक आपस में बात करते-करते एक दूसरे पर क्रोधित हो उठे और ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाने लगे। सन्यासी यह देख तुरंत पलटा और अपने शिष्यों से पूछा, क्रोध में लोग एक दूसरे पर चिल्लाते क्यों हैं? शिष्य कुछ देर सोचते रहे... एक ने उत्तर दिया क्योंकि हम क्रोध में शांति खो देते हैं इसलिए।

सन्यासी ने पुनः प्रश्न किया, पर जब दूसरा व्यक्ति हमारे सामने ही खड़ा है तो भला उस पर चिल्लाने की क्या ज़रूरत है, जो कहना है वो आप धीमी आवाज़ में भी तो कह सकते हैं। कुछ और शिष्यों ने भी उत्तर देने का प्रयास किया, पर बाकी लोग संतुष्ट नहीं हुए। अंततः सन्यासी ने समझाया - जब दो लोग आपस में नाराज़ होते हैं तो उनके दिल एक दूसरे से बहुत दूर हो जाते हैं और इस अवस्था में वे एक दूसरे को बिना चिल्लाये नहीं सुन सकते। वे जितना अधिक क्रोधित होंगे, उनके बीच की दूरी उतनी ही अधिक हो जाएगी और उन्हें उतनी ही ज़ोर से चिल्लाना पड़ेगा।

क्या होता है जब दो लोग प्रेम में होते हैं?

तब वे चिल्लाते नहीं... बल्कि धीरे-धीरे बात करते हैं, क्योंकि उनके दिल करीब होते हैं, उनके बीच की दूरी नाम मात्र की रह जाती है। सन्यासी ने बोलना जारी रखा **और जब वे एक दूसरे को हद से भी अधिक चाहने लगते हैं तो क्या होता है?**

तब वे बोलते भी नहीं...

प्रिय शिष्यों:- जब तुम किसी से बात करो तो ये ध्यान रखो कि तुम्हारे हृदय आपस में दूर न होने पाएं, तुम ऐसे शब्द मत बोलो जिससे तुम्हारे बीच की दूरी बढ़े, नहीं तो एक समय ऐसा आएगा कि ये दूरी इतनी अधिक बढ़ जाएगी कि तुम्हें लौटने का रास्ता भी नहीं मिलेगा। इसलिए चर्चा करो, बात करो, लेकिन चिल्लाओ मत।